P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-XII*August-2016

यज्ञ पर्यावरण प्रदूषण के निराकरण का सशक्त साधन

श्यामलाल
व्याख्याता,
संस्कृत विभाग,
चौ.बल्लूराम गोदारा राजकीय
कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

सारांश

यज्ञ शब्द यज् धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ – पूजा, संगति एवं दान से लिया जाता है, देव की पूजा, बराबर वालों से संगति तथा छोटों को कुछ देना ही यज्ञ है। दूसरे शब्दों में सकल जड़ और चेतन द्वारा परस्पर एक–दूसरे को देना व पूर्णता प्रदान करान ही यज्ञ है। यह अनेकविध बतलाये गये हैं। यज्ञ से वातावरण शुद्ध बनता है और अपेक्षित तत्त्वों तथा जीव–जन्तुओं की रक्षा की जा सकती है। यजुर्वेद पूर्णरूपेण यज्ञपरक है। वेदों में यज्ञ को ही श्रेष्ठ कर्म माना गया है।

''अनन्ता वै वेदाः'' वेदज्ञान अनन्त है। अतः वेदों में हर समस्या का समाधान खोजा जा सकता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वर्तमान में हमारे समक्ष मुँह बाये खड़ी पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का निदान वेदों में मिल जाये। वैदिक वाङ्मय विविध बहुमूल्य विचाररूप रत्नों का रत्नाकार है। इसमें कहीं ईश्वर की स्तुति की दिव्य तरंग है तो कहीं जीवन को उन्नत बनाने वाली उदात्त भावनाओं एवं प्रार्थनाओं का समिश्रण है। कहीं औषध–विज्ञान एवं चिकित्सा शास्त्र की चर्चा है तो कहीं राष्ट्रीय व राष्ट्रोत्थान का संदेश। कहीं शैक्षिक उन्नयन में गुरू–शिष्य की आचार संहिता है, तो कहीं मानव जीवन में प्राकृतिक सन्तुलन हेतु यज्ञ की पावनता।

सम्प्रति भौतिकवादी युग में पर्यावरण प्रदूषण की ज्वलन्त समस्या का हल वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अनुसन्धानों से अन्वेषण किया जा रहा है। वहीं आज से हजारों वर्षो पूर्व हमारे ऋषि–मुनियों ने यज्ञ की संकल्पना की थी जो कि इस समस्या के समाधान का सशक्त माध्यम है। जिसकी प्रासंगिकता अद्यतन भी है। वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति का प्रधान अंग 'यज्ञ' एक विशेष आविष्कार के रूप में देखा जा सकता है। प्राचीन काल में मानव जीवन वर्षा पर निर्भर था। वर्षा के अभाव में पशु सम्पदा एवं वनस्पति का अभाव हो जाता। अतः आर्यों ने इच्छानुसार जल बरसाने का आविष्कार किया जिसे 'यज्ञ' नाम से जाना गया।

यज्ञ के माध्यम से ही पर्यावरण के विभिन्न घटकों में प्राकृतिक और भौतिक संसाधनों के साथ जैव विविधता की भी सुरक्षा की जाती थी। मानव जीवन के कल्याण में यज्ञ की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यज्ञ में प्रयुक्त घी तथा जल, समिधा व सुगन्धित द्रव्य क्रिया। शुद्धि के लिए छोड़ा जाता है। जो अपने श्रेष्ठ गुणों से वातावरण को शुद्ध बनाती है। पर्यावरण की सुरक्षा यज्ञ में निहित है और यज्ञ की सुरक्षा उसके निरन्तर क्रियावयन में है। ऋतु सम्बन्धी जितने भी यज्ञ है उन्हें विधिवत् रूप से किया जाये तो वायुमण्डल शुद्ध व हानिकारक गैंस व कीटाणुओं से रहित रहता है। यज्ञ की अग्नि व धूँआ जब आकाश में व्याप्त होता है तो वह वहाँ प्रदूषित वातावरण को नष्ट करने में समर्थ होता है। यज्ञ से मन व बुद्धि निर्मल होती है। मन में सात्विक विचार उत्पन्न होते हैं, बुद्धि की कलुशिता नष्ट होती है। चित्त शान्त रहता है। आत्मिक बल मिलता है। शारीरिक रोगों विशेषतः संक्रामक रोगों का विनाश होता है। पर्यावरण में मिश्रित रोगाणुओं का नाश होता है, मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता में अभिवृद्धि होती है।

अतः भौतिक एवं आध्यात्मिक शुद्धिकरण तथ दोनों में सामंजस्य स्थापित करने में यज्ञों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। बौद्धिक संतुलन के पश्चात् ही भौतिक संतुलन किया जा सकता है। मानव को अपना आन्तरिक स्वरूप श्रेष्ठ तथा पर्यावरण के अनुकूल बनाना ही आध्यात्मिक है। भौतिक यज्ञ से पूर्व इस आध्यात्मिक यज्ञ की अनुभूति आवश्यक है। स्वयं को जानने तथा स्वयं के चारों ओर के वातावरण को शुद्ध रखते हुए सुरक्षित रखने में ही पर्यावरण प्रदूषण से सुरक्षा कर पाना है।

वैदिक काल में हर घर में यज्ञ सम्पन्न होता था। जिसके कारण समय–समय पर वर्षा होती थी तथा शुद्ध वायु संचरित होती थी। यज्ञ में हवन सामग्री का जितना महत्त्व है उतना ही छन्दोबद्ध मन्त्रोचारण का भी है। छन्दोबद्ध लय के साथ उच्चरित मन्त्रों से पूरा वातारवण तरंगित होता है। यज्ञ से हुई वर्षा के जल से अनेक बीमारियों का अन्त होता है। वातावरण शुद्ध होता है।

मुख्य शब्द :ऋग्वेद संहितायजुर्वेद, संहिता छान्दोग्य, उपनिषद् तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, तांड्य,ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मणउपनिषद्, ऐतरेय ब्राह्मण, अथर्ववेद संहिता।

प्रस्तावना

वेद भारतीय संस्कृति एवं मानव जीवन का आधार स्तम्भ है। वेदों में वर्णित तथ्य प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण है। मानव जीवन को सन्तुलित, समृद्ध एवं रोगमुक्त, प्रदूषण मुक्त करने के संबंध में वेदों में यज्ञ का महत्त्व प्रतिपादित किया है। यज्ञ में प्रयुक्त सामग्री से पर्यावरण शुद्ध होता है। जीवों के लिए यज्ञ जीवन रक्षक है। यज्ञीय अग्नि प्रदूषणकारी तत्त्वों एवं घातक कीटाणुओं को नष्ट कर पर्यावरण को शुद्ध करती है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक के सभी दोष दूर होते हैं। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि यज्ञ सृष्टि की धुरी है।

यज्ञ ही वह विधि है जिसके द्वारा न केवल शारीरिक रोगों से मुक्ति मिलती है बल्कि सर्वविध मानसिक संताप और बौद्धिकी पीड़ा का निवारण कर मानव में श्रेयंस्कारी सात्विक विचार, शान्ति एवं आरोग्यता प्रदान करता है। आत्मबल एवं इच्छाशक्ति को सुदृढ़ करते हुए मनोविकास में अभिवृद्धि करता है।

विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका हे कि अग्निहोत्र आदि यज्ञों से कुछ ऐसी गैसें निकलती है जो वायुमण्डल को शुद्ध करती है और वायु प्रदूषण से मुक्ति दिलाती है। यज्ञ के समय मंत्रों का सस्वर पाठ ध्वनि प्रदूषण की समस्या का निराकरण करने में सहायक सिद्ध होता है। सस्वर पाठ से होने वाली ध्वनि तरंगें ध्वनि प्रदूषण को कुछ हद तक नष्ट कर देती है। मन्त्रोचारण से शारीरिक कम्पन से स्वतः ही योग होता है। जो शारीरिक रोगों से भी निजात दिलाता है।

फ्रांस के वैज्ञानिक **"ट्रिलबर्ट"** का मानना है कि यज्ञ में प्रयुक्त द्रव्य सामग्री शक्कर आदि मिष्ट पदार्थों में वायु को शुद्ध करने की असाधारण शक्ति है। यज्ञ के धूएँ में क्षय, चेचक, हैजा, आदि संक्रामक रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है।

वेदों में नदी, तालाबों आदि के जल को शुद्ध करने के लिए यज्ञ को आवश्यक बताया गया है। यज्ञ की वायुशोधक प्रक्रिया से जल भी शुद्ध होता है।

"सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः$_1$। (अथर्व 1.4.3)

पाश्चात्य वैज्ञानिक हाले, पामर और बुगे ने अपने अनुसन्धान में कहा है कि – यज्ञीय अग्नि से गैंस के रूप में अनेक पदार्थ निकलते हैं। ये वायु में मिलकर सुगन्ध पैदा करते हैं। जिससे वायु प्रदूषण दूर होता है और रोगों का निवारण होता है।$_2$

(डॉ. रामप्रकाश, हवन यज्ञ और विज्ञान, पृ.सं.52)

प्राचीन काल में ऋषि–मुनि पर्वतों में शान्त वातावरण में यज्ञ करते थे। पर्वत शुद्ध वायु प्रदान कर रोग नष्ट करता है। पर्वतों में स्थित वनस्पति जैसे देवदार, चीड़ आदि के पेड़ पर्यावरण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यज्ञ में प्रयुक्त समिधा के जलने से वातावरण शुद्ध होता है। वर्तमान काल में पर्यावरण की समस्या से समस्त मानव जाति को यज्ञ का महत्त्व जानना चाहिए। ताकि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से निजात मिल सके।

यज्ञ का महत्त्व

चारों वेदों में यज्ञ का बहुत अधिक महत्त्व वर्णित है। इसका मुख्य कारण यह है कि यज्ञ ही वह विधि है, जिसके द्वारा प्राकृतिक संतुलन बनाए रखा जा सकता है। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायुमंडल की पवित्रता, विविध रोगों का नाश, शारीरिक और मानसिक उन्नति तथा रोग निवारण के कारण दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। यज्ञ के द्वारा भू–प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण को दूर किया जा सकता है। इसलिए वेदों में यज्ञ पर इतना बल दिया गया है।

यज्ञ या अग्निहोत्र वह वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा वायुमण्डल में ऑक्सीजन और कार्बनडाई ऑक्साइड का संतुलन बना रहता है। प्रकृति में एक चक्र की व्यवस्था, जिसके अनुसार प्रत्येक पदार्थ अपने मूल स्थान पर पहुंचता है।इसी के आधार पर ऋतुचक्र, वर्षचक्र, अहोरात्रचक, सौरचक्र,चान्द्रचक्र आदि प्रवर्तित होते हैं। इस प्राकृतिक चक्र को ही पारिभाषिक शब्दावली में यज्ञ कहा जाता है। यह प्राकृतिक यज्ञ विश्व में प्रतिक्षण चल रहा है। ऋग्वेद और यजुर्वेद में इस प्राकृतिक यज्ञ का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वर्षचक्ररूपी यज्ञ में वसन्त ऋतु घी है, ग्रीष्म ऋतु समिधा और शरद् ऋतु हव्य। वसंत के बाद ग्रीष्म ऋतु, ग्रीष्म के बाद वर्षा और वर्षा के बाद शरद् ऋतु और शरद् के बाद वसंत । इस प्रकार यह वर्षचक्र पूरा होता है।

यत् पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् हविः।।[1]

यह प्रक्रिया अणु, परमाणु से लेकर सूर्य, चन्द्र आदि तक सर्वत्र चल रही है, इसका ही नाम यज्ञ प्रक्रिया है। इसके द्वारा ही सृष्टि के प्रत्येक कण में नित्य परिवर्तन हो रहा है और सृष्टि चक्र चल रहा है। अतएव यजुर्वेद में कहा गया है कि यह यज्ञ सृष्टिचक्र का केन्द्र है।

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।[2]

इसी प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है कि यज्ञ के द्वारा द्युलोक को प्रसन्न किया जाता है और द्युलोक वर्षा के द्वारा पृथ्वी को तृप्त करता है। यज्ञ से मेघ और मेघ से वर्षा होती है।

भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति, दिवं जिन्वन्त्यग्नयः।[3]

इसी बात को गीता में कहा गया है कि यज्ञ के द्वारा देवों को प्रसन्न करो और देवता वर्षा के द्वारा तुम्हें प्रसन्न करें। इस प्रकार परस्पर आदान–प्रदान से तुम्हारी श्रीवृद्धि हो।

देवान् भावयतानेन, ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः, श्रेयः परमवाप्स्यथ।।[4]

यजुर्वेद में उत्तम कृषि के लिए यज्ञ को आवश्यक बताया गया है। यज्ञ से बादल, बादल से वर्षा और वर्षा से उत्तम कृषि का वर्णन है।

कृषिश्च में वृष्टिश्च मे ..... यज्ञेन कल्पन्ताम्।[5]

यजुर्वेद के अनुसार यज्ञ से सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते है। यज्ञ से पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक के सभी दोष या प्रदूषण दूर होते हैं। यजुर्वेद के सत्रहवें अध्याय के 17 से 29 मंत्रों में यज्ञ में सभी प्रकार की कृषि, वर्षा, ऊर्जा, दीर्घायुष्य, वृक्ष–वनस्पतियों की समृद्धि, अन्नसमृद्धि, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति, शारीरिक पुष्टि,

नीरोगता, प्रदूषण नाशन के द्वारा सुख शान्ति की प्राप्ति का उल्लेख है।[6]

छान्दोग्य उपनिषद् में यज्ञ को पर्यावरण प्रदूषण के निराकरण का सर्वोत्तम साधन बताया गया है। यज्ञ के विषय में कहा गया है कि यह सब अशुद्धियों, दोषों या प्रदूषण को दूर करके पवित्र बनाता है, अतः इसको यज्ञ कहा जाता है।

एष ह वै यज्ञो योऽयं पवते,
इदं सर्वं पुनाति, तस्मादेष एव यज्ञः।[7]

ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ को सृष्टि का केन्द्र बताया गया है। यज्ञ सारे जीवों का रक्षक है, इसलिए इसको भुज्यु कहा गया है। यज्ञ जीवन को सुरक्षा प्रदान करता है। ऋतुसंधियों पर होने वाले संक्रामक रोगों को दूर करने के लिए भैषज्य यज्ञों का विधान है। भैषज्य यज्ञ रोगों के साथ ही विविध प्रदूषणों को दूर करते हैं। यज्ञ प्रदूषण दूर करके पवित्रता प्रदान करता है।

यज्ञो वै भुवनस्य नाभिः।[8]
यज्ञो हि सर्वाणि भूतानि भुनक्ति।[9]
भुज्युः सुपर्णो यज्ञः।[10]
यज्ञो वा अवति।[11]
भैषज्ययज्ञा वा एते, ऋतुसंधिषु प्रयुज्यन्ते,
ऋतुसंधिषु वै व्याधिर्जायते।[12]
अयं वै यज्ञो योऽयं पवते।[13]

यज्ञ में प्रयुक्त समिधा के लिए ऐसे वृक्षों का चयन किया गया है, जिनसे कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा बहुत कम मिलती है और जो शीघ्र जल जाते है। इनका कोयला नहीं बनता, अपितु राख ही बनती है। इनसे धुआं भी बहुत कम बनता है। कार्बनडाई ऑक्साइड कम बनने से इनसे हानि की संभावना नहीं रहती। अतएव समिधा के लिए आम, गूलर, पीपल, शमी, पलाश (ढाक) बड़, बिल्व (बेल) आदि का ही विधान है। ठोस लकड़ियां शीशम आदि निषिद्ध है।

यज्ञ हेतु घृत (घी) में भी गाय का घी सर्वोत्तम माना गया है। घी यज्ञ का प्रधान द्रव्य है। यह शरीर को तेज और बल देता है। यज्ञ में डाला हुआ घी रोग निरोधक है और वायुमंडल को शुद्ध करता है। यह विषनाशक भी है, अतः सांप के काटे हुए को घी पिलाया जाता है। पुराने घी को सुंघाने से उन्माद रोग दूर होता है। यज्ञ में घी का प्रयोग वायु प्रदूषण को दूर करने का उत्तम साधन है।[14]

समिधा, घृत, मिष्ट पदार्थ (गुड़, शक्कर, चीनी, किशमिश, छुहारा, द्राक्षा आदि), स्थालीपाक (लड्डू, खीर, मोहनभोग, मीठा चावल, बिना नमक की खीचड़ी) ये चारों होम द्रव्य जब अग्नि में डाले जाते हैं तो अग्नि के द्वारा उनका विघटन होता है और वे अत्यंत सूक्ष्म अणुरूप में हो जाते है। जिस प्रकार अणुबम अत्यंत प्रभावशाली होता है, उसी प्रकार ये चारों होम द्रव्य सूक्ष्मरूप होकर वायुमंडल को शुद्ध करते हैं।

यज्ञ में प्रयुक्त हव्य पदार्थ अग्नि में पड़कर हल्का हो जाता है। वह वायु की सहायता से सर्वत्र फैल जाता है। जहां तक यज्ञ की सुगन्धित वायु पहुंचती है, वहां तक दूषित वायु नष्ट होती है और प्रदूषण का निवारण होता है। यज्ञ में प्रयुक्त थोड़ी सी मात्रा वाले घी, शक्कर और केसर कस्तूरी आदि से भी लाखों लोगों को लाभ पहुंचता है।

अग्नि प्रदूषण निवारक

वेदों में पर्यावरण शुद्धि के लिए अग्नि का बहुत उल्लेख है। अग्नि का गुण है– दाहकता। वह जहां भी अशुद्धि है, प्रदूषण है या घातक कीटाणु हैं, उनको सदा नष्ट करता है। चाहे यज्ञ की अग्नि हो, घरेलू अग्नि हो, वन की अग्नि हो या समुद्री अग्नि हो, वह सर्वत्र ही प्रदूषणकारी तत्त्वों को नष्ट करती है। इसलिए वेदों में अग्नि का दोषनाशक के रूप में बहुत गुणगान है। अग्नि को सारे प्रदूषणकारी तत्त्वों को नष्ट करने वाला कहा गया है।

अग्नि को विश्वशुच् अर्थात् संसार को पवित्र करने वाला कहा गया है। वह पर्यावरण को शुद्ध करता है, अतः उसे पावक कहते हैं। अग्नि को रक्षोनाशक, वृत्रहा, असुरहन्ता आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है।

प्राग्नये विश्वशुचे ..... असुरघ्ने।[15]
अग्नी रक्षांसि सेधति।[16]
उदग्निर्वृत्रहाऽजनि।[17]

सूर्य प्रदूषण नाशक

वेदों में पर्यावरण प्रदूषण को नष्ट करने के लिए सौर ऊर्जा को अमोघ अस्त्र बताया गया है। ऋग्वेद और अथर्ववेद का कथन है कि उदय होता हुआ सूर्य दिखाई पड़ने वाले और न दिखाई पड़ने वाले सभी प्रकार के प्रदूषण को नष्ट करता है। प्रदूषण फैलाने वाले कीटाणुओं को वेद में कृमि, यातुधान और रक्षस् नाम दिया है।

उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा।
दृष्टान् च घ्नन् अदृष्टान् च, सर्वान् च प्रमृणन् क्रिमीन्।[18]

यजुर्वेद का कथन है कि सूर्य अपनी पवित्र किरणों से वायुमण्डल के प्रदूषण को नष्ट करता है।

ध्वनिप्रदूषण–निवारक शब्दशक्ति

वेदों में वाक्तत्त्व या शब्दशक्ति का बहुत महत्त्व वर्णन दिया गया है। शब्द को विश्वव्यापी महान् शक्ति बताया गया है। शब्द के लिए कहा गया है कि जिस प्रकार ब्रह्म सारे संसार में व्याप्त हे, उसी प्रकार वाक् या शब्द भी सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है।

यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्।
यावद् द्यावापृथिवी तावदित् तत्।।[19]

ध्वनिप्रदूषण के नियंत्रण के उपाय : लाउडस्पीकर आदि पर प्रतिबंध, शोर अवशोषक यंत्रों का प्रयोग आदि। वैदिक विधि के अनुसार वेद मंत्रों आदि का स्वर मधुर ध्वनि के पाठ, भजन, कीर्तन, संगीत आदि का आयोजन, स्थान–स्थान पर मधुर ध्वनि से धार्मिक ग्रन्थों का पाठ, सुभाषितों का पाठ आदि। यदि मधुर ध्वनि या श्रवण सुखद ध्वनि से मंत्रों, श्लोकों, भजनों आदि का प्रसार होता है तो ध्वनिप्रदूषण की समस्या का काफी अंश तक हल हो सकेगा।

पर्वत प्रदूषण – नाशक

ऋग्वेद का कथन है कि पर्वत शुद्ध वायु देकर मृत्यु से रक्षा करते हैं। अतएव पर्वतों से रक्षा की प्रार्थना की गई है।[20]

अन्तर्मृत्यु दधतां पर्वतेन।[21]

अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासः।[22]

पर्वत संसार के पालक और पोषक हैं, अतः उन्हें 'पुरुभोजस्' कहा गया है। एक मंत्र में जल, वायु, पर्वत और वनस्पतियों को सुखदाता मानकर उनसे सुख शांति की प्रार्थना की गई है।

गिरिं न पुरुभोजसम्।[23]

आपो वातः पर्वतासो ... शृणोतु हवम्।[24]

पर्वतों पर देवदार, चीड़ आदि के पेड़ पर्यावरण शोधक, रोगनाशक और स्वास्थ्यवर्धक होते हैं अतः पर्वतों को मधुवर्षक, सुखवर्धक और स्वास्थ्यवर्धक बताते हुए उनसे सुख की प्रार्थना की गई है।[25]

आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे।[26]

एक मंत्र में शुद्ध वातावरण और स्वास्थ्यलाभ के लिए बाल–बच्चों सहित पर्वतों पर जाने का वर्णन है।

तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवः।[27]

विभिन्न तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि यज्ञ ही प्रदूषण समस्या के निराकरण का सशक्त साधन है। इसी कारण से वेदों में यज्ञ का विधान बताया गया है तथा हमारे ऋषि–मुनियों ने यज्ञ परम्परा का निर्वहन् किया है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी वातावरण शुद्धि के लिए यज्ञ को प्रामाणिक माना गया है। आधुनिक काल में प्रदूषण की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। अतः हम सबका यह कर्त्तव्य है कि इस समस्या के समाधान के लिए अधिकाधिक हवन, यज्ञादि पर बल दिया जायें

उद्देश्य

1. यज्ञ द्वारा पर्यावरण प्रदूषण को रोकना।
2. संक्रामक रोगों से सुरक्षा एवं जीव रक्षा।
3. आम–जन में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जाग्रत करना।
4. प्रकृति के सन्तुलन को बनाये रखना।
5. वायुमण्डल को शुद्ध रखना।

निष्कर्ष

आज मनुष्य आधुनिक बनने की होड़ में आर्थिक उन्नति की चाह में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहा है। जिसके चलते पर्यावरण प्रदूषण की भयावह स्थिति से दो–चार होना पड़ रहा है। इस ज्वलन्त समस्या का निराकरण यज्ञों द्वारा किया जा सकता है। यज्ञ से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न होता है, अन्न से सभी जीव–जन्तुओं की रक्षा होती है। वनस्पति उत्पन्न होती है जिससे वातावरण शुद्ध रहता है।

मनुष्य द्वारा सम्पन्न पर्यावरण प्रदूषण का निराकरण अग्निहोत्रादि यज्ञों द्वारा किया जा सकता है। खुले में शौच एवं मल मूत्रादि के विसर्जन, अपशिष्ट पदार्थों की सड़ान्ध, धूम्रपान, औद्योगिकरण, यातायात आदि के कारण उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण को दूर करना हमारा परम कर्त्तव्य है। इसका उपाय यज्ञों की संकल्पना में है। यज्ञ में प्रज्वलित अग्नि में हव्य सामग्री के पड़ते ही उनका धुँआ आकाश में व्याप्त होता है। जिससे अनेकविध रोग नष्ट होते हैं। वातावरण शुद्ध होता है। जिसे क्षेत्र में यज्ञ का आयोजन किया जाता है। हानिकारक रोगाणुओं का विनाश होता है। मानव जीवन सुरक्षित होता है। पृथ्वी पर जितने अधिक यज्ञ होंगे। पर्यावरण व प्राकृतिक सन्तुलन उतना ही सुदृढ़ होगा।

मानव के लिए यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ कर्म की ओर प्रेरित करता है। यज्ञों की भारतीय सनातन संस्कृति में महत्त्वपूर्ण भूमिका है जोकि हमें पर्यावरण ज्ञान से साक्षात्कार करवाते हैं। जब मानव पर्यावरण का महत्त्व समझते हुए प्राकृतिक सन्तुलन को बनाये रखने का प्रयास करता है तब सकल मानव जीवन ही यज्ञ बन जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग 10.90.6, यजु 31.14
2. यजु. 23.62
3. ऋग् 1.164.51
4. गीता 3.11
5. यजु. 18.9
6. यजु. 9.21, 28.1 से 29, 22.33
7. छान्दो. उप. 4.16.1
8. तैत्ति. ब्रा. 3.9.5.5
9. शतपथ ब्रा. 9.4.1.11
10. यजु. 18.42
11. तांड्य ब्रा. 6.4.5
12. गोपथ ब्रा.उ. 1.19
13. ऐतरेय ब्रा. 5.33
14. अर्थव. 6.32.1
15. ऋग् 7.13.1
16. अ. 8.3.26
17. ऋग् 1.74.3
18. ऋग् 1.191.8, अथर्व. 5.23.6., 6.52.1
19. ऋग्. 10.114.8
20. ऋग्. 5.46.6
21. ऋग्. 10.18.4
22. ऋग्. 6.52.4
23. ऋग्. 8.88.2
24. ऋग्. 8.54.4
25. ऋग्. 6.49.14, 8.53.3, 8.18.16
26. ऋग्. 8.31.10
27. ऋग्. 5.41.9